Date __/__/__
Page _____

सुजान भगत

- प्रेमचंद

1. सुजान भगत की संपत्ति बढ़ी तो क्या करने लगा?

सुजान भगत की संपत्ति बढ़ी तो, साधु संतों का आदर - सत्कार होने लगा, द्वार पर धूनी जलने लगी। कानूनगो इलाके में आते, तो सुजान महतो के चौपाल में ठहरते। इलाके के हेड कांस्टेबल, थानेदार, शिक्षा - विभाग के अफ़सर, एक न एक उस चौपाल में पड़ा ही रहता। कभी - कभी भजन - भाव हो जाता। गाँजे और चरस की बहार उड़ने लगी। गाँव में कुल तीन कुएँ थे, बहुत से खेतों में पानी न पहुँचता था, खेती मारी जाती थी। सुजान ने एक पक्का कुआँ बनवा दिया।

2. घर में सुजान भगत का अनादर कैसे हुआ?

सुजान के हाथों से धीरे - धीरे अधिकार छीने जाने लगे। किस खेत में क्या बोना है, किसको क्या देना है, किसको क्या लेना है, किस भाव क्या चीज बिकी, ऐसी - ऐसी महत्वपूर्ण बातों में भी भगत जी की सलाह न ली जाती थी। भगत के पास कोई जाने ही न पाता। दोनों लड़के या स्वयं बुलाकी दूर से ही मामला तय कर लिया करती। गाँव भर में सुजान का मान - सम्मान बढ़ता था, अपने घर में घटता था। वह अब घर का स्वामी नहीं, मंदिर का देवता था।

3. सुजान भगत पेड़ के नीचे बैठकर क्या सोचता है?

सुजान पेड़ के नीचे बैठकर विचारों में मग्न हो गया। अपने ही घर में यह अनादर! अभी

Scanned with CamScanner

वह अपाहिज नहीं है, हाथ पाँव थके नहीं हैं घर का कुछ काम करता ही रहता है। उस पर यह अनादर। उसी ने घर बनाया, यह सारी विभूति उसी के श्रम का फल है, पर अब इस घर पर उसका कोई अधिकार नहीं रहा। अब वह द्वार का कुत्ता है, पड़ा रहे और घरवाले जो रूखा सूखा दे दें, वह खाकर पेट भर लिया करे। ऐसे जीवन को धिक्कार है। सुजान ऐसे घर में नहीं रह सकता।

4. सुजान भगत को सबसे अधिक क्रोध बुलाकी पर क्यों आता है?

सुजान को सबसे अधिक क्रोध बुलाकी पर ही था। वह भी लड़कों के साथ थी। वह बैठी देखती रही और भोला ने सुजान के हाथ से अनाज छीन लिया। उसके मुँह से इतना भी न निकला कि ले जाते हैं, तो ले जाने दो। लड़कों को न मालूम हो कि सुजान ने कितने श्रम से यह गृहस्थी जोड़ी है, पर वह तो जानती थी। दिन को दिन और रात को रात नहीं समझा। भादों की अँधेरी रात में मड़ैया लगा के जुआर की रखवाली करता था, जेठ-बैसाख की दोपहरी में भी दम न लेता था, और अब सुजान का घर पर इतना भी अधिकार नहीं है कि भीख दे सके।

5. चैत के महीने में खलिहानों में सत्युग के राज का वर्णन कीजिए।

चैत का महीना था। खलिहानों में सतयुग का राज था। जगह-जगह अनाज के

Date / /
Page

ढेर लगे हुए थे। यही समय है, जब कृषकों को भी थोड़ी देर के लिए अपना जीवन सफल मालूम होता है, जब गर्व से उनका हृदय उछलने लगता है। सुजान भगत टोकरे में अनाज भर-भर कर देते थे और दोनों लड़के टोकरे लेकर घर में अनाज रख आते थे। कितने ही भाट और भिक्षुक भगत जी को घेरे हुए थे। उनमें वह भिक्षुक भी था, जो आज से आठ महीने पहले भगत के द्वार से निराश होकर लौट गया था।

6. सुजान भगत भिक्षुक को कैसे संतुष्ट करता है।

चैत का महीना था। खलिहानों में सतयुग का राज था। जगह-जगह अनाज के ढेर लगे हुए थे। सुजान भगत टोकरे में अनाज भर-भर कर देते थे और दोनों लड़के टोकरे लेकर घर में अनाज रख आते थे। कितने ही भाट और भिक्षुक भगत जी को घेरे हुए थे। उनमें वह भिक्षुक भी था, जो आज से आठ महीने पहले के द्वार से निराश होकर लौट गया था। सुजान ने अनाज का ढेर दिखाकर उससे कहा कि जितना अनाज उठाकर ले जा सको, ले जाओ। तब भिक्षुक डर रहा था कि कहीं उस ने अनाज भर लिया और भोला ने उठाने न दिया तो कितनी भद्द होगी। उसकी हिचकिचाहट देखकर स्वयं सुजान ने उसकी चादर में अनाज भरा, गठरी बाँध कर खुद गठरी सर पर रख कर उसके घर पहुंचाया। इस तरह सुजान ने भिक्षुक को संतुष्ट किया।

7. सुजान भगत अपना खोया हुआ अधिकार फिर कैसे प्राप्त करता है?

भोला और बुलाकी द्वारा अपमानित सुजान अत्याधिक परिश्रम कर ऐसी फसल उगाता है कि

Scanned with CamScanner

Date / /
Page

खलिहानों में अनाज रखने को जगह नहीं मिलती। आठ महीने के निरंतर परिश्रम का सुजान को फल मिलता था। सुजान में लगन थी और उसी ने उन्हें अमानुषीय बल प्रदान किया था। आठ महीने पहले खाली हाथ लौटा हुआ भिक्षुक खड़ को संतुष्ट किया और भोला से कहा - ये भाट और भिक्षुक खड़े हैं, कोई खाली हाथ न लौटने पाये। भोला सिर झुकाए खड़ा था। उसे कुछ बोलने का हौसला न हुआ। वृद्ध पिता ने उसे परास्त कर दिया था। इस प्रकार सुजान ने अपना खोया हुआ अधिकार को प्राप्त किया।

ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

1. "भगवान की इच्छा होगी, तो फिर रुपये हो जायेंगे। उनके यहाँ किस बात की कमी है"

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश को हमारे पाठ्यपुस्तक साहित्य गौरव के सुजान भगत पाठ से लिया गया है। प्रस्तुत पाठ के लेखक मुंशी प्रेमचंद जी हैं।

प्रसंग :- सुजान ने बुलाकी से इस वाक्य को क

स्पष्टीकरण :- एक दिन गाँव में गया के यात्री आकर ठहरे। सुजान ही के द्वार पर उनका भोजन बना। सुजान के मन में भी गया करने की बहु दिनों से इच्छा थी। यह अच्छा अवसर देखकर वह भी चलने को तैयार हो गया। तो बुलाकी ने कहा कि - अभी रहने दो, अगले साल चलेंगे। सुजान ने गंभीर भाव से कहा कि - "अगले साल क्या होगा, कौन जानता है। धर्म के काम में मीन-मेष निकालना अच्छा नहीं। तो बुलाकी

कहती है कि हाथ खाली हो जाएगा। इस संदर्भ में सुजान कहता है कि - "भगवान की इच्छा होगी, तो फिर रुपये हो जायेंगे। उनके यहाँ किस बात की कमी है?"

विशेषता :- सुजान के मन में भगवान के प्रति भक्ति का वर्णन।

२. 'अभी ऐसे बूढ़े नहीं हो गए कि कोई काम ही न कर सकें।'

प्रसंग :- इस वाक्य को भोला बुलाकी से कहता है।

स्पष्टीकरण :- एक दिन बुलाकी ओखली में दाल छाँट रही थी। एक भिखमंगा द्वार पर आकर चिल्लाने लगा। इतने में भोला आकर बोला - अम्माँ, एक महात्मा द्वार पर खड़े गला फाड़ रहे हैं, कुछ दे दो। नहीं तो उनका रोयाँ दुःखी हो जायेगा। तब बुलाकी ने अपेक्षा के भाव से कहा - भगत के पाँव में क्या मेंहदी लगी है, क्यों कुछ ले जाकर नहीं देते? तब भोला पिताजी की शिकायत करने लगा कि दिनभर एक न एक खुचड़ / दोष निकालते रहते हैं। चौपट करने पर लगे हुए हैं, सौ दफे कह दिया कि तुम घर-गृहस्थी के मामले में न बोला करो, पर इनसे बिना बोले रहा ही नहीं जाता। इस संदर्भ में भोला कहता है कि - "भगत क्या हुए कि दीन-दुनिया दोनों से गये। सारा दिन पूजा-पाठ में ही उड़ जाता है। अभी ऐसे बूढ़े नहीं हो गये कि कोई काम न कर सकें।"

विशेषता :- सुजान के प्रति भोला की शिकायतों का वर्णन / सुजान का अपमान / अनादर।

३. 'आदमी को चाहिए कि जैसा समय देखे वैसा काम करे।'

Scanned with CamScanner

Date __/__/__
Page _____

प्रसंग :- इस वाक्य को बुलाकी सुजान से कहती है।

स्पष्टीकरण :- बेटे के द्वारा अपमानित सुजान घर से बाहर पेड़ के नीचे बैठकर विचारों में मग्न था। तब बुलाकी पति को मनाने आती है और सुजान को समझाने लगती है और कहती है, "आदमी को चाहिए कि जैसा समय देखे वैसा काम करे। मर्द बड़े समझदार होते हैं पर तुम सबसे न्यारे हो, अब हमारा और तुम्हारा निबाह इसी में है कि नाम के मालिक बने रहें और वही करें जो लड़कों को अच्छा लगे। जो कमाता है, उसी का घर में राज होता है, यही दुनिया का दस्तूर है। मैं बिना लड़कों से पूछे कोई काम नहीं करती।"

विश्लेषणा :- सुजान का अनादर।

4. "अब तक जिस घर में राज्य किया, उसी घर में पराधीन बनकर वह नहीं रह सकता"

प्रसंग :- इस वाक्य को लेखक पाठकों से कहते हैं।

स्पष्टीकरण :- सुजान के सामने एक नई समस्या खड़ी हो गई थी। वह बहुत दिनों से घर का स्वामी था। और अब भी वैसा ही समझता रहा। परिस्थिति में कितना उलटफेर हो गया था, इसकी उसे खबर न थी। लड़के उसका सेवा-सम्मान करते हैं, यह बात उसे भ्रम में डाले हुए थी। लड़के उसके सामने चिलम नहीं पीते, खाट पर नहीं बैठते, यह सब उसके गृह-स्वामी होने का प्रमाण था। पर आज उसे यह ज्ञात हुआ कि यह केवल श्रद्धा थी, उसके स्वामित्व का प्रमाण नहीं। इस संदर्भ में

Scanned with CamScanner

Date / /
Page

लेखक ने उपर्युक्त वाक्य को कहा।
विशेषता :- सुजान का अपमान।

5. 'अच्छा, तुम्हारे सामने यह ढेर है। इसमें से जितना अनाज उठाकर ले जा सको, ले जाओ'
प्रसंग :- इस वाक्य को सुजान, भिक्षुक से कहता है।
स्पष्टीकरण :- चैत का महीना था। खलिहानों में सत्युग का राज था। जगह-जगह अनाज के ढेर लगे हुए थे। सुजान भगत टोकरे में अनाज भर-भर कर देते थे और दोनों लड़के टोकरे लेकर घर में अनाज रख आते थे। कितने ही भाट और भिक्षुक भगत जी को घेरे हुए थे। इनमें वह भिक्षुक भी था, जो आज से आठ महीने पहले भगत के द्वार से निराश होकर लौट गया था। भगत ने उस भिक्षुक को पहचान लिया और बोला - "अच्छा, तुम्हारे सामने यह ढेर है। इसमें से जितना अनाज उठाकर ले जा सको, ले जाओ।"
विशेषता :- भिक्षुक, को संतुष्ट करना और दूसरों की सहाय करना।

Scanned with CamScanner